अनुक्रमणिका

		पृ. क्र.
प्राक्कथन		1- 5
आमुख - रामकथा का संक्षिप्त परिचय।		6- 15
प्रथम अध्याय -	तुलसी की जीवनी एवं साहित्य कृतियों का परिचय।	
द्वितीय अध्याय -	तुलसी के उपास्य राम।	16- 36
तृतीय अध्याय -	`रामचरितमानस के चार संभाषण`	37-48
	अ) याज्ञवल्क्य और भरद्वाज संभाषण।	48-150
	ब) शिव और पार्वती संभाषण।	
	क) काकभुशुण्डि और गरुड संभाषण।	
	ड) तुलसी और संत संभाषण।	
चतुर्थ अध्याय -	उपसंहार	151- 158
	परिशिष्ट :	159 - 167
	१) तुलसीदासजी की रचनाएँ	
	२) संदर्भ ग्रंथ सूची	
	अन्य सहायक ग्रंथ सूची	

प्राक्कथन

प्राक्कथन

गोस्वामी तुलसीदासजी का संपूर्ण जीवन-दर्शन एक सच्चे भक्त अथवा संत की गहरी अंतर्दृष्टि पर आधारित है। हम भारतीय संस्कृति एवं चिंतन के अविरल प्रवाह पर ध्यान दें तो अनुभव करेंगे कि प्राक् ऐतिहासिक काल से संस्कृति, चिंतन, अनुभूति तथा धार्मिक मान्यताओं को समेटने का कार्य हिंदी साहित्य बराबर करता चला आ रहा है। इसमें योगदान करनेवालों में तुलसीदासजी की अपनी अलग पहचान है।

गोस्वामी तुलसीदासजी भक्ति काल के श्रेष्ठ कवि हैं। उनका भक्ति से ओतप्रोत कवि रूप अपनी मार्मिक अभिव्यक्ति के कारण रमणीय है। यही कारण है कि उनका काव्य हमारे हृदय की भावभूमि को तो पुलकित करता ही है एवं विचारबोध के स्वरों को भी अपनी विविधता से चमत्कृत करता है। तुलसीदासजी का `रामचरितमानस` इस क्षेत्र की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है।

`रामचरितमानस` के प्रति मैं बाल्यावस्था से ही आकृष्ट रही हूँ। इस आकर्षण का कारण है हमारी रामभक्ति की पारिवारिक परम्परा। घर के सदैव आध्यात्मिक वातावरण ने ही मुझे `रामचरित` पर अध्ययन करने को प्रेरित किया। एम.ए. की पढाई के दौरान मुझे तुलसीजी को पढने का मौका मिला। तत्पश्चात एम.फिल. के बहाने लघु-शोध-प्रबंध के रूप में `रामचरितमानस` पर काम करने का मौका प्राप्त हुआ। `मानस` का अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त होते ही मैं ने तुलसीदासजी के `रामचरितमानस` के चार संभाषण` इस विषय में कार्य करना निश्चित किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की प्रारंभिक अवस्था में कुछ प्रश्न मन में उठ खडे हुये, वे हैं -

१) तुलसीदासजी ने राम को ही उपास्य क्यों माना ?
२) एक ही रामकथा को चार संवादों के द्वारा कहने का तुलसीदासजी का उद्देश्य क्या है ?
३) कर्म, ज्ञान और भक्ति का विश्लेषण संवादों में किस प्रकार हुआ है ?
४) तुलसीदासजी ने चारों संवादों की संगति किस तरह बिठायी है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैं ने तुलसीदास के `रामचरितमानस` के चार संभाषण का अनुशीलन करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित है।

प्रस्तुत प्रबंध के आमुख में विभिन्न धार्मिक साहित्य में आयी रामकथा का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है। इसी के अंतर्गत वैदिक, मराठी, जैन, बौद्ध, संस्कृत के साथ-साथ हिंदी साहित्य में आयी रामकथा का संक्षिप्त विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में तुलसीदासजी की जीवनी एवं साहित्य कृतियों पर संक्षेप में विचार किया गया है। किसी भी कवि का व्यक्तित्व युग परिवेश से निर्मित होता है। कवि-व्यक्तित्व की निर्मिति में उस युग की विचारधाराओं एवं समकालीन परिस्थितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। तुलसी भक्तिकालीन कवि होने के कारण उनके व्यक्तित्व में भक्त रूप प्रखरता से व्यक्त हुआ है।

द्वितीय अध्याय में मैं ने तुलसीदासजी के उपास्य राम का स्वरूप वर्णन करके उन्होंने राम को ही उपास्य क्यों माना है ? इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय - ` रामचरितमानस के चार संमाषण ` यही अध्याय मेरे प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का हृदयस्थल है । ये चार संमाषण -

१) याज्ञवल्क्य और भरद्वाज ।

२) शिव और पार्वती ।

३) काकभुशुण्डि और गरुड ।

४) तुलसी और संत ।

इन चार संवादों में तुलसीदास ने वक्ता और श्रोता के द्वारा कर्म, ज्ञान, और भक्ति को साधन मानकर राममक्ति की महिमा गायी है । ` याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संमाषण ` कर्म पर आधारीत है, ` शिव और पार्वती संमाषण ` ज्ञान पर, ` काकभुशुण्डि गरुड संमाषण` भक्ति पर और ` तुलसी-संत संमाषण ` दीनता पर आधारीत है । ये चार संमाषण मुनि, देवता, पक्षी और मनुष्य इन चार वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसप्रकार इस अध्याय में तुलसीदास ने चार संमाषणों में एक ही रामकथा को अलग-अलग पध्दति से अपनाकर अभिव्यक्त किया है । उन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित करके समाज के सामने एक महत्तम आदर्श प्रस्तुत किया है इसी का विस्तृत विवेचन इस अध्याय में किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में उपसंहार है । यह प्रबन्ध के विषय का सार रूप है ।

प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है । परिशिष्ट के पूर्वार्ध में तुलसीदासजी की रचनाओं की सूची दी गयी है । उत्तरार्ध में संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गयी है और उसके बाद अन्य सहायक ग्रंथ-सूची भी दी गयी है । अंत में कोश एवं पत्रिकाओं की भी सूची दी है जो सभी विषय विश्लेषण की आधारशिला बन सके हैं । साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध श्रध्देय गुरुदेव प्रा. शारद कणबरकरजी के सूक्ष्म निरीक्षण और निर्देशन का फल है। वे सदा सृजन कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन करते हुं रहे। आप के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और विद्वतापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए पथ-प्रदर्शन किया। आपके साथ सौ. कणबरकरजी का भी प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा। आप दोनों की मैं सदैव ऋणी रहूँगी और यह आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा।

डॉ. व्ही.व्ही. द्रविडजी की भी मैं अत्यन्त ऋणी हूँ क्योंकि आपने मुझे मेरे विषय की बारीकियों को समझाकर योग्य दिशा-दिग्दर्शन करने में अनमोल सहायता की।

आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ. व्ही.के. मोरे, डॉ. के.पी. शहा, प्रा. तिवले, प्रा. वेदपाठक, प्रा. मुजावर, प्रा. हिरेमठ, प्रा. भागवतजी के प्रति भी सविनय आभार प्रकट करती हूँ। कुरुंदवाड कॉलेज की प्राचार्य माया पाटीलजी के वात्सल्यपूर्ण स्नेह के लिए भी उनकी आभारी हूँ। प्राचार्य डॉ. गुंडे, प्राचार्य बी.ए. पाटील, डॉ. गो.रा. कुलकर्णी, प्रा. कडलासकरजी के स्नेहपूर्ण आशीष के लिए भी उनकी आभारी हूँ।

अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देनेवाले और जिनके आशीर्वाद के बिना यह शोध कार्य असंभव है, वे मेरे पूज्यवर चाचाजी, माता-पिता, स्नेहसागर, बड़ी दीदी की भी आभारी हूँ। मेरे छोटे भाईयोंका भी अच्छा सहयोग मिला। प्रा. नंदकुमार आर.

रानमरेजी की मी आमारी हूँ जिन्होंने ग्रंथ-उपलब्धि में मेरी निस्वार्थ माव से सहायता की। मेरे सहपाठी और सहेलियों की मी आमारी हूँ, जिनकी शुमकामनाएँ इस कार्य के साथ थी।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथमाल डॉ. जे.बी. जाधव, ग्रंथालय के श्री. गुरव, माने, चांदेकर, राऊत तथा लिपिक मोसलेजी की सहायता के प्रति आमारी हूँ।

आर्टीस्ट श्री. सदानंद के.सुतारजी की सहृदय सहायता के प्रति आमार प्रकट करती हूँ। अंत में इस शोध-प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम करनेवाले श्री. क्वडेजी के प्रति मी आमार प्रकट करती हूँ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबंध अत्यन्त विनम्रता के साथ आप के अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ।

Mpatil

(कु.मंदाकिनी दत्ताजीराव पाटील)
शोधछात्रा

कोल्हापुर।
दिनांक 8/10/1990